भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमि

अमर कांत

उन्नीसवीं शताब्दी में हुए धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलनों ने भी भारतीयों के हृदय में पर्याप्त मात्रा में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया। शताब्दियों तक पराधीन रहने के कारण भारतवासी अपने सांस्कृतिक वैभव को भूल गये थे। भारत में अंग्रेजों के आने से ईसाई धर्म का प्रचार होने लगा। इसने भी हिन्दू धर्म के अस्तित्व को चुनौती दी। ऐसे समय कुछ महान् आत्माएँ हुईं, जिन्होंने हिन्दू धर्म तथा संस्कृति की रक्षा के हेतु प्रयत्न किये। उन्होंने भारतीयों को उनके प्राचीन गौरव से अवगत कराया तथा उनके हृदय में यह भावना भरी कि उनकी सभ्यता एवं संस्कृति किसी से कम नहीं थी तथा पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण करना उनके लिए उचित न था। ऐनी बेसेण्ट ने कहा भारतीय संस्कृति एक विशाल वृक्ष है, जिसके पीछे शताब्दियों का इतिहास है। जवाहरलाल नेहरू ने भी भारत में राष्ट्रीय जागृति के कारणों का उल्लेख करते हुए कहा है, 'यह दो बातों का परिणाम थी—पश्चिम का अवलोकन तथा 'अपना और अपने भूतकाल का निरीक्षण।' डॉ० रघुवंशी ने भी कहा है कि राष्ट्रीय आन्दोलन काफी सीमा तक पुनरूत्थानवादी आन्दोलन था। राष्ट्रीयता पुरानी स्मृतियों एवं उपलब्धियों पर निर्भर करती है तथा जब साम्राज्यवादियों के दबाव से प्रताणित होकर भारत की राष्ट्रीय आत्मा अपने भूतकाल से प्रेरणा प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन में भी भारतीय जनता को अपने प्राचीन गौरव का ज्ञान हुआ तथा भविष्य में प्रगति करने की सम्भवना भी प्रतीत हुई। इन धार्मिक सुधार—आन्दोलनों का राष्ट्रीय जागरण पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा।